डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज

– वाराणसी –

स्नातक पाठ्यक्रम

बी.ए. भाग - 1 (प्रथम सत्र)

-: हिन्दी विभाग :-
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

तीन वर्षीय हिन्दी स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम (सत्र 2010-11 से लागू)

बी0ए0 भाग–1

प्रथम सत्र

प्रथम प्रश्न पत्र

भक्ति काव्य CHD -101 C

कोड- BAH-111

क्रेडिट : 03

भक्तिकाव्य हिन्दी भाषी समाज की जीवित विरासत का महत्वपूर्ण अंग है। इस पाठ्यक्रम में भक्ति काव्य की विविध धाराओं के शीर्ष कवियों कबीर, जायसी, सूरदास और तुलसीदास के माध्यम से हम भक्ति आंदोलन और भक्ति काव्य के विविध पक्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

निर्धारित पाठ्य अंश : भक्तिकाव्य संग्रह - संपा० हिंदी विभाग, का०हि० प्रका० विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर : (पद) मन रे जागत रहिये भाई, अकथ कहानी प्रेम की, संतौ भाई आई ज्ञान की आँधी रे, हम न मरै, काहे रे नलिनी, मोको कहाँ ढूढ़े बंदे ,ना जाने तेरा साहब कैसा है, रहना नहिं देस बिराना है, माया महा ठगिनि हम जानी, मेरा तेरा मनुआ कैसे इक होई, दुलहिनी गावहुँ मंगलचार, तोहि मोरी लगन लगाये रे फकीरवा, हंसा करो पुरातन बात।

साखी – 3.29, 3.33, 3.45, 5.39, 11.2, शेष (10) पूर्ववर्ती पाठ्यक्रम से यथावत

कबीर ग्रंथावली- श्यामसुंदर दास

जायसी : पदमावत – मानसरोदक खंड

सूर : अविगत गति कुछ कहत न आवै, जा पर दीनानाथ ढरै, अब मैं नाच्यौ बहुत गुपाल, मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै, किलकत कान्ह घुटुरूवनि उआवत, जसोदा हरि पालने झुलावै, मैया हौं न चरैहौं गाइ, मुरली तऊ गुपालहिं भावति, बूझत स्याम कौन तू गोरी, जसुमति राधा कुँवरि सँवारति, तबही तै हरि हाथ बिकानी, झूलत स्याम स्यामा संग, अद्भूत एक अनूपम बाग, ऊधौ मन न भए दस बीस, ऊधौ जोग जोग हम नाहीं । (15)

तुलसी : विनय पत्रिका (गीता प्रेस सं.) –पद सं. 146, 155, 162, 172, 174, 198, 230.

रामचरित मानस : तुलसीदास (गीता प्रेस संस्करण),
अयोध्या कांड– दोहा सं. 163 से 169.

इकाई 1 : भक्ति आंदोलन एवं भक्ति काव्य

(I) भक्ति आंदोलन : लोक जागरण

(II) भक्ति : आशय

(III) हिन्दी का भक्ति काव्य : इतिहास

(IV) भक्ति काव्य : विविध धारायें

इकाई 2 : कबीर

(I) कबीर का काव्य संसार

(I1) कबीर की कविता : सामाजिक भूमिका

(II1) कबीर : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

(III) कबीर की काव्य–कला

इकाई 3 : जायसी

(I) जायसी का काव्य संसार

(II) पद्मावत में सूफ़ी तत्व

(II) मानसरोदक खण्ड का महत्व

(IV) काव्य कला

इकाई 4 : सूरदास

(I) काव्य संसार

(II) प्रेम का स्वरूप

(III) वात्सल्य वर्णन

(IV) काव्य कला

इकाई 5 : तुलसीदास

(I) तुलसी : काव्य संसार

(II) सामाजिक–पारिवारिक आदर्श

(III) रामचरित मानस का महत्व

(IV) काव्य कला

अनुशंसित ग्रंथ :

1. सूरदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. तुलसी: एक पुनर्मूल्यांकन –सं. अजय तिवारी, आधार प्रकाशन, पंचकूला
3. कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. लोकवादी तुलसीदास– विश्वनाथ त्रिपाठी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. जायसी – विजयदेव नारायण साही, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद
6. कबीर की खोज – राजकिशोर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. पूरा कबीर –सं. बलदेव वंशी, प्रकाशन संस्थान, नयी दिल्ली
8. महाकवि सूरदास – नंददुलारे वाजपेयी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
9. सूर साहित्य – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई
10. गोस्वामी तुलसीदास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

11. गोसाईं तुलसीदास – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी

12. तुलसी आधुनिक वातायन से –रमेष कुंतल मेघ, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली

13. परम्परा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली

14. भक्तिकाव्य और लोक जीवन – शिवकुमार मिश्र, दिल्ली

द्वितीय प्रश्न पत्र

(रीतिकाव्य) BEHD – 102 C

कोड - BAH-112

क्रेडिट : 03

तीन महत्वपूर्ण कवियों बिहारी, घनानंद और भूषण के माध्यम से रीतिकाव्य की विशिष्ट प्रकृति को समझने के साथ ही इस प्रश्न पत्र में हम रीतिकाव्य की पृष्ठभूमि में कार्य कर रही विविध काव्यशास्त्रीय अवधारणाओं यथा–रस, अलंकार और छंद की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे।

पाठ्यांश : रीतिकाव्य संग्रह और काव्यांग परिचय- सं० हिंदी विभाग, का.हि.वि.वि., विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बिहारी : बिहारी (सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) : दोहा सं 2, 5, 11, 34, 37, 45, 66, 75, 82, 84, 90, 95, 104, 114, 118, 199, 263, 316, 525, 550 511, 515, 530, 539, 467, 473, 474, 490, 521, 577 (30).

घनानन्द : घनानंद कवित्त : सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र, छंद सं० 2, 3, 4, 5, 6, 8, 10,13, 14, 15 (10).

भूषण : रीति काव्य धारा – सं. रामचंद्र तिवारी, छंद सं० 9, 10, 11, 12, 15, 18, 21, 22, 23, 24 (10)

इकाई 1 : बिहारी

(I) काव्य संसार

(II) 'रीति' सिद्ध कवि के रूप में बिहारी

(III) श्रृंगारिकता

(IV) काव्य कला

इकाई 2 : घनानंद एवं भूषण

(I) घनानंद : प्रेम वर्णन

(II) घनानंद : भाषा एवं काव्य कला

(III) भूषण : वीरता की कविता

(IV) भूषण : भाषा एवं काव्य कला

इकाई 3 : रस

(I) रस : परिभाषा, साधारणीकरण

(II) रस निष्पति

(III) श्रृंगार रंस : उदाहरण सहित परिचय

(IV) अन्य रस : उदाहरण सहित परिचय

इकाई 4 : अलंकार

(I) अलंकार : परिभाषा , भेद

(II) शब्दालंकार : अनुप्रास, यमक, श्लेष

(III) अर्थालंकार :उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा

(IV) संदेह, भ्रांतिमान, उल्लेख, अतिशयोक्ति

इकाई 5 : छंद

(I) छंद की अवधारणा

(II) वर्णिक एवं मात्रिक छंद

(III) दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय, कुंडलिया, रोला का

उदाहरण सहित परिचय

(IV) हरिगीतिका, सवैया, मनहरण कवित्त एवं घनाक्षरी कवित्त का उदाहरण सहित परिचय।

अनुशंसित ग्रंथ :

1. रीतिकाव्य की भूमिका – नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

2. बिहारी का नया मूल्यांकन – बच्चन सिंह, लोकभारती, इलाहाबाद

3. घनानंद और स्वच्छंद काव्यधारा – मनोहर लाल गौड़, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

4. रीतिकालीन कवियों की प्रेमव्यंजना – डॉ0 बच्चन सिंह, ना0प्र0सभा, काशी

5. रीतिकालीन काव्य सिद्धान्त – डॉ0 सूर्यनारायण द्विवेदी, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

6. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग–2, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी।

B.Com. (Hons.) Part-I

Semester-I
BC 1.1 Language

कोड : BCH-H-111

सामान्य हिन्दी

समय – 3 घंटे पूर्णांक –75

अंको का विभाजन इस प्रकार होगा :

व्याकरण	50
समीक्षात्मक प्रश्न	15
लघुत्तरी	10
योग	75 अंक

व्याकरण भाग के अंतर्गत निम्नलिखित का अध्ययन किया जाएगा :

बैंकिंग, व्यवसाय संबंधी पारिभाषिक शब्दावली	5
व्यवसायिक, प्रशासनिक पत्र	5
संक्षेपण	5
भाव पल्लवन	10
शब्द शुद्धि	5
वाक्य शुद्धि	5
विलोम	5
सामाजिक विषयों पर निबंध	10
योग	50 अंक

समीक्षात्मक प्रश्न के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक का नाम :

साहित्य की ओर – सं डॉ0 मोहनलाल तिवारी, प्रकाशक, हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन, वाराणसी

पाठ्य निबंध और कहानियाँ– बुद्ध की शिक्षा, कछुआ धर्म, भाषा और राष्ट्रीय एकता, राजसत्ता का अंत (निबंध) कफन, पुरस्कार, मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, कर्मनाशा की हार (कहानियाँ)

नोट : लघुत्तोरी प्रश्न भी निर्धारित निबंधों और कहानियों से ही पूछे जाएंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. सामान्य हिन्दी –डॉ0 विजय पाल सिंह –हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
2. हिन्दी संरचना –डॉ0 मोहन लाल तिवारी–आदर्श पुस्तक भंडार, कलकत्ता
3. मानक हिन्दी व्याकरण–एन0 सी0 ई0 आर0 टी0, नई दिल्ली

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

हिन्दी विभाग

भारतीय भाषाएँ : हिन्दी

(सेमेस्टर पद्धति के अनुरूप- सत्र 2010-11 से लागू)

बी.ए., भाग एक

प्रथम सत्र

(हिन्दी भाषा)

HD -101 L

कोड : BAHL-111

प्रथम प्रश्नपत्र

क्रेडिट : 03

हिन्दी कहानियाँ : ईदगाह ,मधुआ, फूलों का कुरता, अपना-अपना भाग्य, पंचलाइट, दाज्यू, इंसपेक्टर मातादीन चाँद पर, डिप्टी कलेक्टरी

(1) ईदगाह - प्रेमचन्द
(2) मधुआ - जयशंकर प्रसाद
(3) फूलों का कुरता - यशपाल
(4) अपना अपना भाग्य - जैनेन्द्र
(5) पंचलाइट - रेणु
(6) दाज्यू - शेखर जोशी
(7) इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर - परसा
(8) डिप्टी कलक्टरी - अमरकांत

इकाई 1 : (I) विधा के रूप में कहानी

(II) हिन्दी कहानी : संक्षिप्त रूपरेखा

(III) ईदगाह : कथावस्तु एवं शिल्प

इकाई 2 : (I) मधुआ : कथावस्तु एवं शिल्प

(II) फूलों का कुरता : कथावस्तु एवं शिल्प

(III) अपना-अपना भाग्य : कथावस्तु एवं शिल्प

इकाई 3 : (I) पंचलाइट : कथावस्तु एवं शिल्प

(II) दाज्यू : कथावस्तु एवं शिल्प

(III) इंसपेक्टर मातादीन चाँद पर : कथावस्तु एवं शिल्प

(IV) डिप्टी कलेक्टरी : कथावस्तु एवं शिल्प

इकाई 4 : (I) हिन्दी वर्तनी एवं वर्तनी–शुद्धि

(II) वाक्य–शुद्धि

(III) उपसर्गों एवं प्रत्ययों से शब्द रचना

(IV) विलोम एवं पर्याय